अमृतसर शहर में दूध और दुग्ध-जन्य पदार्थों की खपत

एस्. एस्. गिल

अमृतसर शहर में, सन् १९५६-५७ में दूध उत्पादन और बंटवारे के बारे में, एक लेख[१] प्रकाशित हो चुका है. प्रस्तुत लेख उसका दूसरा भाग है. पहिले लेख में दूध की उपलब्धि और बंटवारे का विश्लेषण दिया गया था. इस लेख में, उसी समय के दूध और दुग्धजन्य पदार्थों की खपत के बारे में, विश्लेषण का यत्न किया गया है. वस्तुलेखा का मूलआधार वही है.

उपलब्ध दूध का प्रमाण

जैसा कि पहिले लेख में वर्णन किया गया है, सन् १९५६-५७ में अमृतसर शहर में दूध की दैनिक औसत उपलब्धि २,५४५ मन थी. इसमें से ७६५ मन दूध (३१ प्रति शत) उन दुधार पशुओं से प्राप्त था जो शहर में ही पलते थे और शेष १,७८० मन दूध (६९ प्रति शत) देहाती इलाकों से शहर में लाया जाता था. कुल दूध में से १११ मन (४·३६ प्रति शत) शिमला, चंदीगढ़ आदि शहरों को निर्यात किया जाता था. अर्थात् प्रति दिन २,४३४ मन दूध (९५·६४ प्रतिशत) की खपत अमृतसर में थी.

दूध का उपयोग या तो पीने के लिये या दही, मक्खन, क्रीम, खोया और घी बनाने के लिये होता है. दही का उपयोग, बहुधा लस्सी बनाने में और भोजन के साथ होता है. आइस्क्रीम, फ्रुटक्रीम आदि में क्रीम काम में लाई जाती है और पेढ़े, बर्फी, कलाकंद आदि मिठाइयाँ बनाने के लिये खोया काम आता है. मक्खन और घी, भोजन तैयार करने के लिये या आहार के साथ उपयोग में लाया जाता है. खोया और घी[२], काफी मात्रा में शहर में बाहर से लाये जाते थे[३]. अमृतसर म्युनिसिपालिटी के चुंगी-कागज़ात से यह अंदाज लगता है कि सन् १९५६-५७ में, औसतन १११ मन घी प्रति दिन बाहर से लाया जाता था. महसूल न देते हुए, चोरी छुपे, जितना घी शहर में लाया जाता होगा उसका अनुमान ८७ मन होगा. इस अनुमान का आधार पहिले लेख के फलस्वरूप है जिसमें यह पता चला था कि कुल दूध का ४४ प्रति शत दूध, बिना चुंगी दिये शहर में आयात होता था[४]. अमृतसर शहर में, कुछ खास गांवों से ही खोया लाया जाता था. अमृतसर जिले के कुछ गांव, जैसे मुल्लर, लोपोके, बराड, कोठला गुजरां, खियाड़ा आदि के कुछ लोग खोया बनाकर शहर में भेजने का काम बड़े पैमाने पर करते थे. अमृतसर शहर में ४ ऐसी दूकानें थीं जो सिर्फ खोया का व्यापार करती थीं. इन ४ दूकानों और हलवाइयों की दूकानों से पूछताछ करने पर पता चला कि औसतन ३५ मन खोया प्रति दिन बाहर से लाया जाता था.

दुग्ध और दुग्धजन्य पदार्थों की खपत

प्रति जन दैनिक दूध की उपभोगता का अंदाज लगाने के लिये दुग्धजन्य पदार्थ और द्रव दूध का समीकरण मालूम होना चाहिये. शहर में तैयार किये गये दुग्धजन्य पदार्थ, कितने दूध से

१ 'अमृतसर शहर में दूध की उपलब्धि और बंटवारा', अर्थविज्ञान, वर्ष १, अंक ३, सितम्बर १९५९, पृष्ठ २४८-५८.

२ इस लेख में घी का मतलब दुग्धजन्य घी से है, वनस्पति से नहीं.

३ अमृतसर शहर में, दही, क्रीम और मक्खन बाहर से आते नहीं देखे गये.

४ अर्थविज्ञान, वर्ष १, अंक ३, सितम्बर १९५९, पृष्ठ २५२.